'होली उत्सव' आसत्त वृत्ति का नाश कर जीवन को रंगीनमय बनाने का उत्सव

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

अपने भारत में विविध धर्मों के वैविध्यपूर्ण व्रतों, उत्सवों और त्योहारों का अनोखा महत्व है और ये सही अर्थों में सस्कृति का आध्यात्मिक वर्सा है। होली और धुलेटी के उत्सव यानी मनुष्य के मन रूपी बर्तन को मांजने का उत्सव का दिन है। आसत्त वृत्ति का नाश कर जीवन को रंगीन बनाना चाहिए, ऐसा संदेश देने वाला यह उत्सव है। होली के दिन रंगों के प्रतीक रूप में गुलाल आदि रंग डालते हैं। अपने उदास रहते मन को परमात्म संग के रंग में रंगने का यह उत्सव है। मानव के मन में बसे हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार रूपी दोषों को होली में दहन करने का ये उत्सव है। होली में रंग गुलाल डालते हैं और एक-दूसरे के दिलों को रंगते हैं। गुलाल रंग के साथ-साथ गीतों का गुलाल भी उड़ाते हैं।

होली के उत्सव मनाने के पीछे पौराणिक कथा है कि हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को भक्ति से छुड़ाने के लिए अनेक प्रयत्न किए, फिर भी वे उसे भक्ति से छुड़ा न सके। और उसको जिंदा जला देने के लिए बहन होलिका प्रहलाद को अपने गोद में ले बैठी। परंतु भक्त प्रहलाद की भक्ति के प्रवाह में होलिका की आग बुझ गई...। यह प्रसंग हमें सीख देता है कि असत्य कितना भी बलवान दिखाई देता हो किन्तु सत्य के सामने सदा हार ही जाता है। इसलिए हमें अपने जीवन को सत्य के मार्ग पर ही जीना चाहिए। अनीति से प्राप्त किया हुआ धन-सम्पत्ति कभी भी लंबा समय तक नहीं टिकता। इसलिए हम सभी को अपना जीवन सदाचारमय और ज्ञानयुक्त होकर जीना चाहिए।

होली के दिन होली प्रगटाते हैं। ऐसे में आज का मानव अपने अंदर के व्यसन, अनीति, भ्रष्टाचार, आसुरी वृत्ति, ईर्ष्या और लोभ की वृत्ति को अन्दर प्रगटा दे तो सबका जीवन सुखमय बन जाए।

होली के उत्सव से हमें यह सीख लेनी है कि हम अपने जीवन को सदा ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों के रंग से रंगीन बनाएंगे, अपने भीतर में ज्ञान का दीप जलाएंगे। अपने मन की मलीनता को जलाकर हमेशा-हमेशा के लिए भष्म कर देंगे और मन को सुमन, शुभ-मन, शुद्ध-मन के पुष्प से भरेंगे। और सर्व के प्रति शुभ भाव रखते हुए मन को पुलकित करेंगे, पुष्ट करेंगे।

होली का मतलब ही है 'हो-ली' माना कि जो बीत गया सो बीत गया, उसे समाप्त करना। हमें सद्गुणों से, सर्व के प्रति कल्याणमय व मंगलमय भावना से स्वयं को अंगीकार करेंगे। ऐसा उंमग-उत्साह और हौसला रखने का व्रत लेंगे। मन को दृढ़ता की डोरी से लगाम लगाते हुए अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाएंगे।

चलते-चलते जीवन में आने वाली कुछ भी प्रतिकूलता को दृढ़ता रूपी व्रत से गंतव्य दिशा की ओर आगे बढ़ते चलेंगे। हमने श्रेष्ठ जीवन जीने का लक्ष्य लिया है। जब भी हम शुभ कार्य के लिए आगे कदम बढ़ाते हैं तो भीतर की कमज़ोरी रूपी राक्षस से सामना होता है। हमें उससे घबराना नहीं है लेकिन उसे सही मायने में पहचान कर अपने मन को दुर्बल होने से बचाना है। स्वयं को व्यर्थ, परचिंतन, परदर्शन, परमत के प्रभाव से मुक्त रख सही दिशा में आगे बढ़ते जाना है। ऐसे कुप्रभाव से अपने जीवन को मुक्त रखना है।

मैं और मेरापन के सूक्ष्म भाव से होने वाले नुकसान को पहचानेंगे और उसका निष्पादन करेंगे। आज मानव मैंपन के भाव में इतना रंगा हुआ है जो उसे सही अर्थों में जान ही नहीं पाता और ना ही समझ पाता कि वो उन्हें कैसे दीमक की तरह अन्दर ही अन्दर खोखला, दुर्बल और शक्तिहीन कर देता है। इसलिए परमात्मा ने हमें बताया हैं कि 'मैं' को अच्छी तरह से जानो, पहचानो। जिसने 'मैं' को सही रूप में पहचान लिया उसे कोई भी ताकत महान बनने से रोक नहीं सकेगी। अन्यथा यही 'मैं' जीवन को गर्त में डाल देगी। 'मैं' की महीनता में जाएंगे तो अपने भीतर की महानता दिखाई देगी व स्वयं की ऊर्जा को जान पाएंगे। और इस ऊर्जा से हमारे जीवन में उमंग-उत्साह का संचार होगा।

हिम्मतहीनता व उदासीनता का जन्मदाता है देह-अभिमान। इसीलिए परमात्मा हमें बारम्बार बड़े प्यार से समझाते हैं कि हे मेरे प्यारे बच्चों, अपने को 'आत्मा' समझो व अपने को आत्मिक गुणों के रंग से रंगो तो देहभान के कोहरे से मुक्त हो जाएंगे। हमारे इस जीवन के सुंदर अवसर को हम सुख-शान्ति-समृद्धि के रंगों से भरकर जीवन उत्सव के रूप में मनाएंगे। ऐसी ही शुभकामना और शुभभावना के साथ आगे बढ़ते चलेंगे।

'खुश रहना' यह है सबसे बड़े ते बड़ी दवाई

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

शिवबाबा ने हमें कहा ओम शान्ति के इस मंत्र को यंत्र बना दो क्योंकि ओम शान्ति का अर्थ है कि मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, तो ओम शान्ति कहने से ही अपने स्वरूप की स्मृति आ जाती है कि मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ। मेरा स्वधर्म ही शान्त है। यह समय ही समस्याओं का है इसलिए समस्या तो आयेगी ज़रूर, लेकिन आप ओम शान्ति के अर्थ स्वरूप में टिक जाओ कि मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, शान्ति के सागर परमात्मा की बच्ची/बच्चा हूँ। तो इस स्मृति से आपकी समस्या समाधान के रूप में बदल जायेगी। कारण, निवारण में बदल जायेगा क्योंकि स्वरूप की स्मृति आ गयी। दिल की बीमारी वालों के लिए खुशी की दवा पहली खुराक है। तो समस्या समाधान में बदल जायेगी तो खुशी होगी ना, तो ओम शान्ति को यंत्र बना दो।

कलियुग का अन्त होने कारण बातें तो आएंगी, बात आती है, चली जाती है। बात आके चली जाने के बाद अगर हम उसी के बारे में सोचते रहेंगे, वर्णन करेंगे तो हमारी खुशी भी चली जायेगी। कोई हमारे घर में आके एक छोटा-सा रूमाल भी लेके जावे तो आप उसको छोड़ेंगे? तो हमारी खुशी, हमारा शुभ चिंतन शान्ति का, उसमें व्यर्थ चिंतन चल जायेगा। और व्यर्थ(वेस्ट) बहुत फास्ट चलने के कारण मन की शक्ति को खो देते हैं इसलिए आप खुशी कभी नहीं गँवाओ। खुश रहना यह बड़े-ते-बड़ी दवाई है। इसके लिए जो बीता सो बीता उसके चिंतन में नहीं जाओ। जो हुआ सो हुआ, फिनिश। बीती को चितवो नहीं। पानी को बिलौने से क्या मिलेगा? बाँहों का दर्द। इसलिए बीती को छोड़ भविष्य को सोचो। मैं आत्मा हूँ, परमात्मा की सन्तान हूँ तो खुशी आएगी तो आपकी यह बीमारी ठीक होती जाएगी। तो जब भी कोई दर्द आपको हो तो उस समय 'मैं आत्मा हूँ' यह गोली ले लो क्योंकि आत्मा, परमात्मा की सन्तान होने कारण शान्ति का सागर, सुख का सागर याद आने से खुद भी ऐसे स्वरूप में स्थित हो जाएंगे। तो यहाँ यह खुशी की खुराक खूब खाओ, इसे खाने की विधि है मैं आत्मा, परमात्मा की सन्तान हूँ। जैसे बाप वैसे मुझे बनना है। तो खुशी कभी नहीं छोड़ना क्योंकि खुशी की खुराक छोड़ दी तो क्या होगा? बातें व्यर्थ आती हैं, हालातें आती हैं उसमें ही लगे रहते हैं लेकिन अभी हमको शिवबाबा कहते हैं इन बातों को छोड़ो खुशी की खुराक ही लो। सदा खुश रहो और खुशी बाँटो क्योंकि यह खुशी ऐसी चीज़ है जो जितना बांटेंगे उतना बढ़ेगी। तो अभी चलते-फिरते भी अपने को आत्मा समझते हर्षित होते रहेंगे। तो हमारा आप सबके प्रति यही शुभ संकल्प है कि आप यहाँ से ठीक होके ही जायेंगे। होना ही है, होंगे नहीं होंगे, यह कभी नहीं सोचो। होना ही है तो हो ही जायेंगे।

हमारी जीवन अभी दुःख से खत्म होके सदा सुख में, शान्ति में, खुशी में बदल गयी। कोई चिंता नहीं क्योंकि जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आंधी और तूफान! तूफान, तोहफा में बदल गया। 'मैं' मेरा बाबा को दे दिया माना सब दुःख दूर। मेरापन आया माना गृहस्थी। तेरा माना शिवबाबा, ट्रस्टीपन। तो ये चेक करो। क्योंकि वायुमण्डल संसार का होता है, इसमें मेरा खत्म होके तेरा हो जाए। मेरा आया तो दुःख, अशान्ति, खिटखिट और तेरा तो सब दुःख दूर।

बाबा के नज़दीक आओ तो शीतल बनने का अनुभव हो...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

शिव पिता का ध्यान करना, यही ज्ञान है। ज्ञान कहता है, अपने ऊपर पूरा ध्यान रखो। बाबा का ध्यान तब रहेगा जब अपने पर ध्यान रहेगा। हमारी याद कहाँ तक है, हरेक अपने आपको टेस्ट कर रहा है। सबकी टेस्ट चल रही है। बुद्धि एक मिनट तो क्या, एक सेकण्ड में शान्त हो जाए। बाबा ने देखा बच्चे अभी तक मिनट-मिनट का ध्यान नहीं रखते हैं। समय थोड़ा है, जाना उस पार है लेकिन अभी तक किनारा ही नहीं छोड़ा है तो पार कैसे पहुंचेंगे? नैया को हमेशा पानी में रखते, गैरेज में नहीं रखते हैं, वह पानी में हिलती रहती है। हमारी नैया भी सागर के बीच है, माया की लहरें जबरदस्त हैं। वह किसी का साथ भी लेने नहीं देती हैं। बाबा यह सब अनुभव कराता है, जिन्होंने किनारा छोड़ा ही नहीं है, तो भले समझते रहें कि हम जा रहे हैं लेकिन वहीं के वहीं खड़े हैं। कर्मबन्धन की जो बड़ी रस्सियाँ हैं, यहाँ आते हैं मुरली सुनते हैं तो अच्छा लगता है, पर आगे बढ़ने का कोई लक्ष्य ही नहीं है। याद ही नहीं है कि घर जाना है। इतना पार करके आये हैं, बाकी अभी थोड़ा रहा है। शरीर पुराना है। तन, मन, धन, जन चारों ही स्वस्थ हों। स्थिति ऐसी हो चारों का साथ हो, अधीनता न हो। जब नैया पर बैठे हैं तो और कोई सहारा ले नहीं सकते हैं। हिलने वाले का साथ कभी नहीं लेना चाहिए।

इतनी अच्छी दवाई है, टाइम पर ले लो। याद में रहने के लिए हर टाइम की विधि अपनी है। सवेरे उठते ही निर्वाणधाम का उठाने वाला शान्ति में खींचता है। खींचने वाला शान्ति का सागर है। वह शान्ति का सागर, ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर जब यहाँ आता है, हमको अपना बनाता है तब हमें पता चलता है। सागर नाम क्यों पड़ा है? गहराई में लेकर जाता है। सागर के किनारे भी आये तो वन्डरफुल ठण्डक होती है। बाबा के नज़दीक आओ तो शीतल बनने का अनुभव हो जाता है। शीतलता का अनुभव होता है, ज्ञान, प्रेम और शान्ति में। सागर को देखते-देखते कितना अच्छा है, कितना मीठा है, लोगों के लिए खारा है। नदी में नहाना आसान है, पर सागर में! सागर को समझना, उसकी गहराई में जाना, बिल्कुल प्युरिफाय हो जाना, तभी कहते हैं पतित-पावन हैं। सागर की गहराई में वो जायेंगे जो समझेंगे पतित हूँ, मुझे पावन बनना है। देवताएं सम्पूर्ण निर्विकारी पूज्य थे, महात्माएं वैसे नहीं हैं।

एक पूज्य, दूसरा पुजारी। अगर कोई न पूज्य है, न पुजारी है माना एकदम विकारी है। वह कभी मन्दिर-मस्जिद में भी नहीं जायेगा। बस खाया-पिया, पैसा कमाया, गंवाया। परंतु बाबा हमको पुजारी से पूज्य बना रहा है। हम जल्दी मानने लग पड़ते हैं, यह हमारा धर्म प्रायः लोप हो गया था, तभी तो कहता है फिर से एक धर्म की स्थापना करता हूँ। कल्प पहले बाबा के बच्चे को स्मृति जल्दी आती है। बाबा के सामने आया तो स्मृति आई, ज्ञान सुना तो ब्राह्मण बन गया।

रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अन्दर शुभ भावना है...

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हम सच्चे बाबा के बच्चे हैं, सच के अन्दर कभी आंच नहीं लाओ तो स्थिति ऊंची बन जाएगी। आज्ञाकारी बनो। आज्ञाकारी अर्थात् हाँ जी, यही हमारा साइन है। जो यहाँ हाँ जी, हाँ जी करेंगे उनकी वहाँ हाँ जी, हाँ जी होगी। हाँ जी करने वाले कभी डगमग नहीं हो सकते। क्यों-क्यों में अपना माथा गर्म नहीं करो, दिमाग को शीतल कुण्ड बनाओ। हाँ जी का पाठ गर्मी निकाल देता। शीतल काया वाले बन जाते।

मेरे दिल में सबके लिए रिस्पेक्ट हो। रिस्पेक्ट वही रख सकते जिनके अन्दर शुभ भावना है। अगर अनुमान और नफरत होगी प्यार भी गंवाएंगे, मान भी। यूनिटी भी गंवाएंगे। भल तुम्हें गिराने लिए कोई ने गड्ढा खोदा हो, लेकिन अगर तुम सच हो, तुम्हारे दिल में उसके प्रति शुभ भावना है तो बाबा तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम्हें बचा लेगा। अन्दर में कभी भी अशुभ भाव न हो। ऐसे नहीं सोचो- देखना यह मेरे लिए ऐसा करता, धर्मराज बाबा इसे कितना दण्ड देंगे। मैं कोई श्राप देने वाली दुर्वासा नहीं। मैं क्यों कहूँ यह मुझे तंग करता- देखना इसकी क्या गति होगी। मैं क्यों बुरा सोचूं। अगर मैंने अशुभ सोचा तो मुझे उसका 100 गुणा दण्ड मिलेगा। क्योंकि मैं दुर्वासा बनी। राजयोगी दुर्वासा नहीं बन सकते। आप अपनी ऐसी स्थिति रखो तो कभी इन्द्रियों की चंचलता आएगी ही नहीं। तुम बाबा को मनाओ तो आपेही सब मान जाएंगे। कई हैं जो भावना रखते सर्विस की और करते हैं डिससर्विस। आपस में नहीं बनती तो लड़ पड़ते। कहेंगे मुझे मान नहीं मिलता तो उसे क्यों मिला!

हमें बाबा ने श्रीमत दी है बच्चे क्षीरखण्ड होकर रहो। स्वप्न में भी लूनपानी नहीं होना। मैं क्षीरखण्ड वाली लूनपानी क्यों होती। अगर लूनपानी होते तो ब्रह्माकुमार-कुमारी कहला नहीं सकते। मेरा काम है दूध-चीनी होकर रहना। अगर मेरे में नमक होगा तो दूसरे भी मेरे ऊपर नमक डालेंगे। लूनपानी होने का मुख्य कारण है देह-अभिमान। अगर मैं इस दुश्मन से किनारा कर क्षीरखण्ड रहूँ तो कोई बात मेरे सामने आयेगी ही नहीं। हवा की तरह चली जाएगी। सदा क्षीरखण्ड रहो माना एकता में, यूनिटी में रहो।

पढ़ाई छोड़ना माना लूला-लंगड़ा बनना। मुरली में बाबा ने जो भी श्रीमत दी है उसे पालन करना मेरा स्वधर्म है। चेक करो मेरे में श्रीमत पालन करने की कितनी शक्ति है? मेरा सारा व्यवहार श्रीमत के अन्दर है। मुझे श्रीमत है- तुम देहधारी की आकर्षण में नहीं जाओ। अगर आर्कषण होती तो वह श्रीमत की लकीर छोड़ता। उन्हें रावण ज़रूर अपनी शोकवाटिका में ले जायेगा। हमें श्रीमत है तुम अपना तन-मन-धन, बाबा की सेवा में लगाओ। अपनी दिनचर्या को श्रीमत के अनुसार चेक करो। ईर्ष्या के वश कभी भी किसी को गिराने का ख्याल नहीं करो। अगर स्वयं को चढ़ाने का संकल्प और दूसरे को गिराने का संकल्प है तो यह बहुत बड़ा पाप है।

भक्ति में कहते हैं हृदय में भगवान बैठा है। यह हृदय हमारे बाबा का घर है। जिनके हृदय में प्रेम है, उनके हृदय में बाबा की याद है। जिनके हृदय में बाबा है, उनके हृदय में बाबा की याद है। जिनके हृदय में बाबा है, उनके हृदय में बाबा के सब रत्न हैं। अगर कहते यह मेरा स्टूडेन्ट.... बाबा कहता मेरा कहना भी बहुत बड़ा पाप है। सब बाबा के स्टूडेन्ट हैं। बाबा के कहने पर चल रहे हैं फिर क्यों कहती- यह मेरा स्टूडेन्ट तुम्हारे सेन्टर पर नहीं जा सकता। मैं तो कहती जो ऐसा सोचते वह बहुत बड़ा पाप करते हैं। चुम्बक हमारा बाबा है, चलाने वाला बाबा है। बाबा के सब प्यारे बच्चे हैं। बेहद की भावना रखो।